মকরধ্বজ

[किसी के दरवाजे खटखटाने की आवाज़ और उसके बाद पुकारने की आवाज़]

आवाज नं० १—सुहैल साहब, जनाब सुहैल साहब ! अरे भई सुहैल साहब है ?

सुहैल—[चुपके से] ग़फ़ूर, देख बाहर कौन है। अगर जमील साहब हों तो कह देना कि अभी वापस नहीं आये। और अगर जगन्नाथ बाबू हों तो कह देना कि अस्पताल गये हुए हैं। अगर कोई और हो तो कह देना ठहरो, पूछकर बताता हूँ। समझ गया ना ?

[बाहर से आवाज फिर आती है] अरे साहब, सुहैल साहब हैं ?

सुहैल—ठीक है जमील साहब हैं। जाकर कह दे कि अभी दौरे से वापस नहीं आये। जा जल्दी जा। [ग़फ़ूर जाता है।]

पत्नी—आखिर यह क्यों सबसे छिप रहे हो ?

सुहैल—चुप तो रहो ज़रा देर, अभी बताये देता हूँ। अजीब मुसीबत में जान है इन लोगों की वजह से। ज़रा देखना दरवाजे के पास जाकर गये कि नहीं।

[नौकर वापस आता है।]

ग़फ़ूर—कह दिया कि अभी दौरे से वापस नहीं आये।

सुहैल—फिर क्या बोले ?

ग़फ़ूर—जी कुछ नहीं। चुप होकर कुछ मुँह-सा चिढ़ाया, कुछ बड़-बड़ाये और पैर पटखते हुए चले गये।

सुहैल—बस ठीक है। अब अगर कोई आये तो बग़ैर मुझसे पूछे कोई जवाब न देना।

पत्नी—तौबा है, इन्हीं बातों से मेरी तबियत उलझती है कि जाने क्या बात है।

सुहैल—अरे साहब, बात-वात कुछ भी नहीं। जमील खड़े हुए हैं

मिम्बरी के लिए और मुक़ाबले पर हैं जगन्नाथ बाबू। मेल जोल इनसे भी है और उनसे भी। कुछ लोग इनकी तरफ़ से कोशिश कर रहे हैं, कुछ उनकी तरफ़ से। मैं क्यों बीच में पड़ूँ ? ऐसे मौक़े पर घर में घुस रहना ही ठीक है।

पत्नी -- हाँ, तुम क्यों किसी की बुराई-भलाई समेटो। जमील साहब की तरफ़दारी न करो तो बुरी बात है उन बेचारे को देखो तुम्हारे लिए सूट का कपड़ा विलायत से मँगाया और जगन्नाथ बाबू हमेशा दोस्ती निभाते चले आये। अभी पिछले ही महीने तो तुमको कश्मीर लेकर गये थे।

सुहैल—ख़ैर, ख़ैर। मैं इन एहसानों की वजह से तो क्या, मगर हाँ अच्छा नहीं समझता कि इस मुक़ाबले में कोई हिस्सा लूँ।

पत्नी—तो अब कब तक घर में घुसे बैठे रहोगे ?

सुहैल—बस यह मुक़ाबला ख़त्म हो जाये इसके बाद। [दरवाज़े पर दस्तक की आवाज़]।

आवाज़ नं० २—अरे भई कोई साहब हैं। सुहैल मियाँ ?

सुहैल—देखना ग़फ़ूर कौन हैं। याद है ना जो मैंने कहा था ?

ग़फ़ूर—[जाते हुए] जी हाँ, याद है।

पत्नी—इन लोगों ने तो अच्छा घेरा तुमको।

सुहैल—ज़रा आहिस्ता बोलो।

पत्नी—सचमुच जैसे चोरों की तरह बैठे हो।

[ग़फ़ूर आता है।]

ग़फ़ूर—वह हैं, क्या नाम जगन्नाथ बाबू। मैंने कह दिया कि अस्पताल गये हैं। तो बैठे हुए अब अस्पताल से आपके आने का इन्तेज़ार कर रहे हैं। और अपने नौकर से कह दिया है कि वह दूकान पर जाकर बैठे।

सुहैल—क्या मतलब, यानी बैठ गये धन्ना देकर।

पत्नी—मैं कहती हूँ कि साफ़ क्यों न कह दो कि मेरे तुम भी दोस्त हो और वह भी।

सुहैल—लाहौल वला क़ूवत! जब समझा न करो तो बोला न करो। तो ग़फ़ूर वह बैठे हैं?

ग़फ़ूर—जी हाँ, बैठे हैं बाहर कमरे में।

सुहैल—क्या मुसीबत है। अजी मैं पिछले दरवाज़े से निकल कर बाहर उनसे मिले ही लेता हूँ और टाले देता हूँ।

पत्नी—और जो वह न टले तो क्या जमील साहब से दुश्मनी मोल लोगे?

सुहैल—लाओ तुम अचकन तो लाओ ताकि वह समझें कि अस्पताल से आ रहा हूँ। टलेंगे तो खैर उनके फ़रिश्ते।

ग़फ़ूर—यह लीजिये मियाँ अचकन!

सुहैल—मियाँ का बच्चा! धीरे से बोला ही नहीं जाता। जाकर वह पिछला दरवाज़ा खोल दे।

पत्नी—मिम्बरी का शौक़ इन दोनों को सवार हुआ है और मुसीबत आई है दोस्तों के सर।

सुहैल—अजी मैं ऐसा चकमा दूँ कि वह भी क्या याद करें।

[जाते हैं।]

[कुछ दूर चलने की आवाज़, अवकाश, फिर चाप]

जगन्नाथ बाबू—बड़ी राह दिखाई सुहैल मियाँ तुमने।

सुहैल—कौन जगन्नाथ बाबू? भई खूब आ गये। मैं तो खुद आपके पास जाने ही वाला था कि अस्पताल से यह खबर आ गई और बदहवास उधर भागना पड़ा।

जगन्नाथ—क्यों खैरियत तो है?

सुहैल—[ठण्डी साँस लेकर] अजी खैरियत कहाँ? हमारी क़िस्मत

में भी कहीं ख़ैरियत है। वही जिस बहन की शादी के लिए आपसे रुपये लिए थे उसी को अस्पताल में छोड़कर आ रहा हूँ। बस यह समझ लीजिए कि जो साँस आ रही है, आ रही है।

जगन्नाथ—अरे, ऐसी हालत हो गई। आख़िर हुआ क्या ?

सुहैला—अजी होता क्या, क़िस्मत का लिखा पूरा हो रहा है। शादी में बोटी-बोटी क़र्ज़ में बँध चुकी है; अब बीमारी में जो कुछ क़िस्मत में लिखा है वह होगा। और बीमारी ही क्या मैं तो यह कहता हूँ कि ख़ुदा ही बचाये अब उसको··· ·· ।

जगन्नाथ—नहीं, ऐसी बात न कहो। मगर यह तो बताओ बीमारी क्या है ?

सुहैल—बीमारी क्या बताऊँ—एक-दो बीमारियाँ हों तो कहूँ। परसों अमरूद के कचालू खाये। [ठण्डी साँस लेकर] बस वही बहाना बन गये। नज़ला हुआ, देखते-ही-देखते बुख़ार हो गया। बुख़ार भी ऐसा कि बस चने भुन रहे थे। फिर निकल आई चेचक। चेचक अभी थी ही कि निमोनिया हो गया। और निमोनिया तो ख़ैर ठीक भी हो जाता मगर अब डाक्टर ने देख कर कहा है कि बीमारी क्या तपेदिक़ है और वह भी चौथे दर्जे की।

जगन्नाथ—अरे, रे-रे! तो फिर अब डाक्टर कुछ उम्मीद बँधाते हैं ?

सुहैल—एक सिविल सर्जन को दिखाया। उसने कहा कि इलाज बेकार है। अस्पताल के बड़े डाक्टर ने कहा कि पचास-पचास रुपये के दो इंजेक्शन लगाकर देखता हूँ। जो सौ रुपये आपके लिए रखे थे वह यों लग गये और अब पता चला है कि अगर ठीक हो गईं तो ठीक हो जायेंगी, नहीं तो फिर जो मुक़द्दर में लिखा है।

जगन्नाथ—और वहाँ अस्पताल में उनके पास कौन है ?

सुहैल—कौन होता बाबूजी, बस ख़ुदा का नाम है। जवाने-जहान क्वारी लड़की !

जगन्नाथ—मगर उसकी तो शादी हो गई है ?

सुहैल—[घबराकर] जी वह, मेरा मतलब यह कि शादी तो हो गई है मगर क्या सुख देखा उस ग़रीब ने शादी का ! आज छठा दिन है कि उसके मुँह में खील तक उड़कर नहीं गई।

जगन्नाथ—मगर आप तो कहते थे कि परसों अमरूद के कचालू खाये थे।

सुहैल—जी हाँ,...वह...कचालू ! कचालू तो ख़ैर खाये थे, बस और फिर कुछ भी नहीं। अब इस वक़्त मैं अपना बिस्तर वग़ैरा लेने आया था कि वहाँ जाकर रहूँ। वह अकेली पड़ी है ग़रीब।

जगन्नाथ—जाओ, भई जाओ। और उस रुपये की कोई फ़िक्र न करना। थोड़ा-बहुत हो सके तो दे दो। बात यह है कि आजकल दूकान पर भी सन्नाटा है। और नया माल रुपया न होने से आ नही सकता।

सुहैल—बाबूजी, मै क्या बताऊँ कि मेरा इस वक़्त क्या हाल है। न दिल क़ाबू में है न दिमाग़। मुझे ख़ुद उसकी बड़ी फ़िक्र है कि किसी तरह जल्द-से-जल्द...[क़दमों की चाप] आओ भई जमील, आओ।

जमील—तुम कब आये, मैं अभी आकर लौट चुका हूँ।

जगन्नाथ—अच्छा भाई, हम चले। दुकान अकेली है। तो मतलब यह कि ख़याल रखना और वैसे कोई फ़िक्र की बात नहीं है।

जमील—क्या ख़ूब, यानी मैं आया और आप चले।

जगन्नाथ—भई दूकान पर कोई नहीं है।

सुहैल—अच्छा तो फिर आदाब अर्ज़ ! [जगन्नाथ जाता है।]

जमील—यार, तुमने मेरा बाजार में निकलना दुश्वार कर दिया है। वह बजाज़ कमबख़्त मारे तक़ाज़ों के मेरा दम निकाले हुए है। और तुमको कोई परवा नहीं होती।

सुहैल—क्या वही सूट के कपड़े का क़िस्सा है ? लाहौल वला क़ूवत कौन दो-ढाई सौ रुपया है, आख़िर हिसाब क्या है उसका ?

जमील—पचास दफ़ा तो आप हिसाब सुन चुके हैं। अरे भई साठ रुपये का बिल है उसका।

सुहैल—बस साठ रुपये के लिए आपका और उसका दम निकला जा रहा है। मैं तो अभी इस जाँकनी से निजात दे देता मगर क़िस्सा यह है कि सरकार तशरीफ ले गई हैं ज़रा अपनी हमशीरा के यहाँ और कुंजियाँ हैं उन्ही के पास। वहाँ है पार्टी।

जमील—अब तो मर्द आदमी, तनख़्वाह भी मिल गई होगी।

सुहैल—ख़ैर तनख़्वाह तो जैसी मिली है उसको मेरा दिल ही ख़ूब जानता है। मगर इत्तेफ़ाक़ से एक चेक आ गया है और उसी में से ये रुपये भी निकाल दूँगा। तुम उसको बस एक हफ़्ता, यानी एक हफ़्ता और मनालो।

जमील—एक हफ़्ता, यानी एक हफ़्ता।

सुहैल—अरे भई, क्या सूरत हो सकती है, तुम ही बताओ। मैं अभी तक गोया दौरे पर हूँ। चुपके से चन्द घण्टों के लिए ख़िराक आया हूँ। और उल्टे पाँव फिर वापस जा रहा हूँ।

जमील—यह तो तुमने बुरी सुनाई। एक हफ़्ते क्या मानी? यह तो अब एक दिन सब्र करने वाला नहीं है।

सुहैल—अरे भई तो कोई उसका रुपया लेकर भागा जा रहा है? कौन सी ऐसी रक़म है जिसके लिए जान दिये देता है। मुझे दौरे पर जाना न होता तो अभी थोड़ी देर में यह क़िस्सा ख़तम कर देता।

जमील—मगर अभी तो तुमने कहा था भाभी नहीं हैं और कुंजियाँ···।

सुहैल—वह···वह ··वह तो मैंने इसलिए कह दिया था कि तुमको फ़ौरन चेक काट देता। मगर वह भी उसी तारीख़ का होता जब यह आया हुआ चेक नक़्द हो सकता।

जमील—तुमने अजीब मुसीबत में फँसा रखा है। उस रोज़ तुमने कहा था कि मंगल के दिन आना। मंगल को आया तो तुमने कह दिया कि तुम्हारी ख़ाला की हालत नाजुक हो रही है।

सुहैल—अरे अब उनका क्या जिक्र करते हो। हज़ारों मन मिट्टी के नीचे दब चुकीं। साहब, हमने तो ऐसी मिलनसार और ऐसी हँसमुख लड़की देखी ही नहीं।

जमील—लड़की ? तुमने तो ख़ाला कहा था।

सुहैल—वह'''ख़ाला'''हाँ ख़ैर ख़ाला तो थीं ही। मगर उम्र में मुझसे बहुत छोटी थीं। अरे अभी उनकी उम्र ही क्या थी। यही कोई बारह-तेरह साल की उम्र होगी। अच्छी-ख़ासी तन्दुरुस्त, न कोई बीमारी न कुछ। चेचक का टीका इसीलिए लगवा दिया था। मगर होने वाली बात के लिए कि छिलके पर पैर पड़ा और गिरते ही बस ख़त्म।

जमील—अच्छा, मगर तुमने तो कहा था कि अर्से से बीमार थीं और हालत रोज़-बरोज़ ख़राब होती ही गई'''।

सुहैल—हाँ हाँ, मतलब कहने का यह कि केले का छिलका तो बहाना बन गया। उसके बाद उनको शदीद दर्द के साथ इख़्तेलाज के दौरे पड़ने लगे और इख़्तेलाज के बाद नज़ला ऐसा हुआ कि बस छींकते-ही-छींकते मरहूम इस दुनिया से सिधार गईं। अफ़सोस !

जमील—मगर इख़्तेलाज या नज़ला तो ऐसा मुहलिक नहीं होता।

सुहैल—अरे मियाँ, मौत को बहाना चाहिये। इख़्तेलाज और नज़ले ही ने तो ग़रीब की जान ली। अब देख लो ना छोटे-छोटे ग़रीब के बच्चे।

जमील—बच्चे ! तुमने कहा बारह-तेरह साल की उम्र होगी।

सुहैल—बारह-तेरह न सही, बाइस-तेइस सही। मतलब यह कि अभी उम्र ही क्या थी ग़रीब की ! मगर मौत के आगे क्या चारा है। आज बीवी उसी के चालीसवें में तो गई हैं।

जमील—अभी से चालीसवाँ···सोम वग़ैरह होगा। मगर तुम तो कह रहे थे वह पार्टी में गई हुई हैं।

सुहैल—भाई बात यह है कि वह लोग ज़रा नई रोशनी के हैं। उनके यहाँ सोम और चालीसवें वग़ैरह में मामूली दावत नहीं होती। इन मौक़ों पर भी पार्टी ही होती है।

जमील—ख़ूब ! अच्छा तो फिर बताओ क्या किया जाय ?

सुहैल—अरे, अब हो ही क्या सकता है ? सब्र के सिवा और अब हम कर ही क्या सकते हैं ?

जमील—हाँ बेशक, दुनिया तो सराये-फ़ानी है ही। जो आया है उसको जाना ही है। मगर मेरा मतलब यह था कि अब इस रक़म के लिए क्या किया जाय।

सुहैल—यक़ीन जानो जमील कि दिल टूट गया। मुझे मरहूमा से बेहद उन्स था। आँखों के सामने हर वक्त तसवीर घूमा करती है। मरने से कुछ ही दिन पहले कहने लगीं, 'दूल्हा भाई, अब हम जिन्दा रहने वाले नहीं है।'

जमील—यानी तुमसे कहा ?

सुहैल—मैं ही मौजूद था वहाँ। मगर उस वक्त तो यह ख़याल भी न था कि कुछ ही दिनों के बाद वह हमेशा के लिए बिछड़ जायेंगी।

जमील—नहीं, मैंने यह पूछा कि यह दूल्हा भाई आख़िर किस रिश्ते से कहा ? थीं तो वह ख़ाला ?

सुहैल—हाँ, यानी वह बात यह है कि असल में अजीब टेढ़ा रिश्ता है। ननिहाल की तरफ़ से तो वह ख़ाला होती थीं और ददिहाल की तरफ़ से गोया दूल्हा भाई कहती थीं।

जमील—ख़ैर तो अब यह बताओ कि इस रुपये का क्या इंतेज़ाम किया जाय ?

सुहैल—रुपये के इंतेज़ाम की क्या जरूरत है। मैंने कहा तो कि चेक आ गया है, बस एक हफ़्ते का वायदा कर लो।

जमील—भाई, यह तो सख्त दुश्वार है। कोई और सूरत नहीं हो सकती ?

सुहैल—मेरे नज़दीक अगर कोई सूरत होती तो कभी दरेग़ नहीं करता।

जमील—अच्छा तो तुम यह करो कि अपना चेक एक हफ़्ते बाद की तारीख़ का काट दो।

सुहैल—यह माना, मगर तुम्हारी भाभी आ जायें जब ही ना।

जमील—तो फिर मैं चल रहा हूँ तुम ग़फ़ूर के हाथ भिजवा देना।

सुहैल—हाँ हाँ, भला कोई बात भी हो। अच्छा भाई तो ख़ुदा हाफ़िज़।

जमील—ख़ुदा हाफ़िज़।

[जाता है और उसके बाद ही दरवाज़े पर दस्तक होती है।]

सुहैल—क्या कर रही हो, आ रहा हूँ। [जाता है।]

पत्नी—मैं पूछती हूँ कि आख़िर यह क़िस्सा क्या है ? मेरी कौनसी बहन ख़ुदा न करे मरी है ? किसका चालीसवाँ है, यह बात क्या है आख़िर ?

सुहैल—यानी आप घर की बैठने वाली ठहरीं, आप इन बातों को क्या समझें ?

पत्नी—मैं तो यह पूछती हूँ कि यह रुपया कैसा माँग रहे हैं ?

सुहैल—इसीलिए तो सैकड़ों बहाने तराश रहा था। मिम्बरी के लिए दोनों खड़े हुए हैं और पास टका किसी के नहीं। वह भी माँगने आये थे और यह भी।

पत्नी—तो क्या इनको यह नहीं मालूम कि तुम्हारे पास रुपया कहाँ से आया। और आख़िर तुमने वादा क्यों कर लिया है ?

सुहैल—वादा किस नामाकूल ने किया है ? बहला-फुसलाकर अपना पीछा छुड़ाया है । [गफ़ूर आता है ।]

गफ़ूर—यह लिफ़ाफ़ा एक आदमी लाया ह, कहता है दर्ज़ी के यहाँ से बिल लाया हूँ ।

पत्नी—बिल कैसा ?

सुहैल—नहीं जी, बिल से मुझे क्या मतलब ? मैं क्या ख़ुदा न ख़्वास्ता किसी का मक़रूज़ हूँ ?

पत्नी—देखूँ तो···। [लिफ़ाफ़ा लेती है ।] यह इस पर तो तीस रुपये लिखा हुआ है ।

सुहैल—कहाँ, देखूँ ? ऐ सुभान अल्लाह ? वाह री आपकी क़ाबलियत ! अरे साहब उसने लिखा है कि तीस वोट गोया मैं जगन्नाथ के लिए मुहैया करूँ । अच्छा गफ़ूर, कह देना कि हम जवाब भिजवादेंगे ।

पत्नी—सचमुच मालूम होता है कि जैसे किसी मक़रूज़ को तक़ाज़े वाले नहीं घेरते हैं, वही हाल तुमने अपना बना रखा है ।

सुहैल—मक़रूज़ ? भई ख़ुदा न करे ऐसी बात न कहा करो । मुझे बस क़र्ज़ ही से चिढ़ है । ख़ुदा बचाये रखे इस बला से ।

ग़फ़ूर—मियाँ, वह हिसाब माँगता है ।

सुहैल—लाहौल वला क़ूवत ! अब मैं कैसे ज़बानी हिसाब लगाकर बता सकता हूँ कि कितने वोट दिलवा सकूँगा । अच्छा मैं ख़ुद उससे कहे देता हूँ । [जाता है ।]

पत्नी—ग़फ़ूर, ज़रा सुनना तो सही क्या कह रहे हैं उससे ।

ग़फ़ूर—बीबी, अब मैं क्या बताऊँ ? मुझे तो कुछ क़रज़-वरज़ का क़िस्सा मालूम होता है ।

पत्नी—तुझे कैसे मालूम ?

ग़फ़ूर—जमील मियाँ और बाबू जी दोनों इसीलिए आये थे । मियाँ ने बड़े-बड़े बहाने किये हैं । मिम्बरी-विम्बरी की तो किसी ने बात भी नहीं कही ।

पत्नी—मेरा तो ख़ुद माथा ठनका था, मगर अब कहती कैसे ! अच्छा अब यह तो पता चला कि यह क़र्ज़ लिया क्यों गया है ।

[सुहैल आता है ।]

ग़फ़ूर—बीवी, वह जमील मियाँ कह रहे थे कि कपड़े वाला किसी तरह नहीं मानता ।

सुहैल—तू झूठा है ! कज्जाब है ! मैंने सूट का कपड़ा हरगिज़ क़र्ज़ नहीं लिया है, न क़र्ज़ सिलवाया है ।

ग़फ़ूर—तो मियाँ, मैं यह कब कह रहा था ?

सुहैल—नहीं कह रहा था ? मैंने ख़ुद अपने कानों से सुना है । और अगर इस नमकहराम ने कहा है कि मैं कश्मीर क़र्ज़ लेकर गया था तो यह भी झूठ है ।

पत्नी—तो कौन कह रहा है कि तुमने क़र्ज़ लिया है ?

सुहैल—आप दोनों में यही बातें हो रही थीं । गोया मैं झूठा हूँ । न मैंने सूट का कपड़ा क़र्ज़ लिया न क़र्ज़ सिलवाया, न क़र्ज़ का सूट पहन कर क़र्ज़ का रुपया लेकर कश्मीर गया । यह सब इसकी तोहमत है । और अब मैं एक मिनट के लिए भी इसको घर में नहीं रख सकता । निकल यहाँ से । [तेज़ होकर] निकल अभी, निकल । नमकहराम—निकल ।

ग़फ़ूर—मियाँ, मैंने तो···।

सुहैल—निकल । इसी वक़्त काला मुँह लेकर निकल । वर्ना मैं गर्दन में हाथ देकर निकालूँगा ।

पत्नी—सुना तो करो किसी की बात । इसका क्या क़सूर है ?

सुहैल—इसका क़सूर नहीं तो मेरा है ? मैं निकला जाता हूँ ।

[तेज़ कदम बढ़ाता है ।]

पत्नी—ठहरो तो सही । पूरा क़िस्सा तो सुनलो । अरे सुनते हो ।

[दरवाज़ा खोलने और बन्द करने की आवाज़]